EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 4, Issue 2, July-December, 2015, Impact Factor 3.842, Available online at: www.eduzonejournal.com

केदारनाथ सिंह की रचनाओं में आंचलिक एवं ग्रामीण भाषा का चित्रण

डॉ. मालती साहू

सहायक प्राध्यापक, श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, जुनवानी, भिलाई

सारांश :

समकालीन हिंदी कविता के प्रमुख कवि केदारनाथ सिंह की रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनकी विशिष्ट काव्यभाषा है। उनकी कविता की भाषा न तो केवल साहित्यिक हिंदी तक सीमित है और न ही वह लोकभाषाओं से अलग किसी कृत्रिम अथवा अभिजात भाषा का रूप ग्रहण करती है। पूर्वांचल की मिट्टी, ग्रामीण जीवन, लोक-संस्कृति, खेती-किसानी, पारिवारिक संबंधों और सामान्य जनजीवन से गहरे जुड़े होने के कारण उनकी काव्यभाषा में आंचलिक एवं ग्रामीण संवेदना स्वाभाविक रूप से देखने को मिलती है । पूर्वांचल की संस्कारों से प्रभावित उनकी अभिव्यक्ति में बोलचाल के शब्द, देशज प्रयोग, लोक-स्मृतियाँ तथा गांव जवार के जीवन से जुड़े बिंब सहज रूप में सम्मोहित होते हैं। केदारनाथ सिंह की विशेषता यह है कि वे सरल जीवन में प्रयोग होने वाले शब्दों और वस्तुओं को भी गहरे भावपूर्ण अर्थ प्रदान करते हैं। केदारनाथ के कविताओं में रोटी, पानी, पेड़, मिट्टी, खेत, पक्षी, घर आदि जैसे शब्द केवल वस्तुओं का परिचय नहीं करवाते, अपितु इनके माध्यम से श्रम, भूख, स्मृति, प्रकृति, मानवीय संबंध और सामाजिक जीवन जैसे व्यापक विषय प्रकट होते हैं। उनकी भाषा में आंचलिकता और आधुनिकता का संतुलित समन्वय दिखाई देता है, जिसके कारण उनकी कविता स्थानीय जीवन से जुड़ते हुए भी व्यापक मानवीय संवेदनाओं तक पहुँचती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में केदारनाथ सिंह की प्रमुख काव्य-कृतियों के आधार पर उनकी रचनाओं में आंचलिक एवं ग्रामीण भाषा के स्वरूप, विशेषताओं, प्रयोग और साहित्यिक महत्त्व का अध्ययन किया गया है। साथ ही भोजपुरी एवं पूर्वांचली भाषिक संस्कार, ग्रामीण शब्द-संसार, लोकधर्मिता, संवादात्मक शैली तथा आंचलिकता और आधुनिकता के पारस्परिक संबंध को भी समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्टीकरण मिलता है कि केदारनाथ सिंह ने लोकजीवन से प्राप्त भाषिक अनुभवों को आधुनिक काव्य-संवेदना से जोड़कर हिंदी कविता को अधिक सहज, जीवंत, और अर्थसमृद्ध बनाया।

मुख्य शब्द: केदारनाथ सिंह, आंचलिक भाषा, ग्रामीण भाषा, लोकभाषा, भोजपुरी, काव्यभाषा, ग्रामीण जीवन, देशज शब्दावली।

प्रस्तावना :

हिंदी कविता के विकास में भाषा पर सवाल हमेशा केंद्रीय रहा है। कविता केवल भावों और विचारों की मिश्रण नहीं होती, अपितु वह अपने वक्त, समाज, भौगालिक और सांस्कृतिक परिवेश की भाषिक स्मृति तथा विरासत को भी सुरक्षित रखती है। आधुनिक हिंदी कविता में अनेक कवियों ने भाषा को अभिजात संस्कारों और जटिलता से मुक्त कर के उसे लोकजीवन, लोकानुभव और सामान्य मानव की संवेदनाओं से जोड़ने का प्रयत्न किया। इस परंपरा में केदारनाथ सिंह का स्थान विशेषतः महत्वपूर्ण है। उनकी कविता में गाँव केवल भूत की स्मृति या रोमानी कल्पना के रूप में उपस्थित नहीं है, बल्कि वह जीवन की मूल संरचना और अनुभवों का महत्वपूर्ण आधारशिला है। यहाँ खेत, पेड़, पौत्धे, नदी, रास्ते, घर, बाजार, रोटी, किसान, माता पिता और साधारण मानव उनकी काव्य-दृष्टि के अनेक महत्वपूर्ण तत्व हैं। इन जीवनानुभवों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए उन्होंने ऐसी भाषा का चयन किया, जो सामान्य जन की बोलचाल और जीवनानुभव के निकट है। हम उनकी रचनाओं में पूर्वी उत्तर प्रदेश

और भोजपुरी अंचल की सांस्कृतिक एवं भाषिक चेतना के प्रभाव को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। यह प्रभाव केवल कुछ स्थानीय शब्दों या आंचलिक प्रयोगों तक सीमित नहीं है, बल्कि उनकी भाषा के वाक्य-विन्यास, संबोधन, संवादात्मकता, वस्तुओं के नामकरण तथा लोकजीवन से जुड़े अनुभवों की संवेदनात्मक संरचना में भी दिखाई देता है। उनकी भाषा में ग्रामीण जीवन की सहजता और लोक-संस्कृति की आत्मीयता के साथ आधुनिक जीवन की जटिलताओं को व्यक्त करने की क्षमता भी मौजूद है। इसी कारण उनकी काव्यभाषा स्थानीयता से जुड़ते हुए व्यापक मानवीय संदर्भों तक पहुँचती है। इस दृष्टि से केदारनाथ सिंह की भाषा **हिंदी और लोकभाषा के बीच एक सृजनात्मक सेतु** का निर्माण करती है। वे लोक से प्राप्त शब्दों और अनुभवों को आधुनिक काव्य-संवेदना के साथ जोड़कर उन्हें नए अर्थ प्रदान करते हैं। परिणामस्वरूप उनकी कविता में आंचलिकता केवल क्षेत्रीय पहचान का माध्यम न रहकर व्यापक सामाजिक और मानवीय अनुभवों की अभियुक्त बन जाती है। यही विशेषता उनकी भाषा को समकालीन हिंदी कविता में विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

केदारनाथ सिंह का जीवन और भाषिक परिवेश :

केदारनाथ सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के गांव क्षेत्र में हुआ था। उनका बचपन गाँव, खेती-किसानी और वहाँ के सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण के बीच बीता। पूर्वांचल का लोकजीवन, उसकी सांस्कृतिक परंपराएँ, लोक-स्मृतियाँ और भोजपुरी भाषिक संसार उनके व्यक्तित्व तथा रचनात्मक चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण रहे। ग्रामीण जीवन से प्रारंभिक जुड़ाव के कारण उनकी कविता में गाँव की मिट्टी की गंध, लोकजीवन की सहजता और सामान्य मनुष्य के अनुभवों की आत्मीयता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने आगे चलकर शहरी जीवन, अत्याधुनिक साम्राज्य, परिवर्तनशील सामाजिक संबंधों और समकालीन जीवन की कठिनाइयों को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया, फिर भी उनकी भाषिक जड़ें ग्रामीण संस्कृति और लोकजीवन से जुड़ी रहीं। यही कारण है कि उनकी कविता में **आधुनिकता और लोकजीवन के बीच विरोध के बजाय संवाद** दिखाई देता है। उनकी प्रमुख काव्य-कृतियों में—*अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ* तथा *बाघ*—में भाषा के विविध रूपों के माध्यम से ग्रामीण अनुभव, लोक-संस्कृति और बदलते जीवन की संवेदना को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है। इस प्रकार उनका भाषिक परिवेश उनकी काव्य-दृष्टि को गहराई प्रदान करता है और उनकी कविता को लोक तथा आधुनिक जीवन के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु बनाता है।

आंचलिक एवं ग्रामीण भाषा की अवधारणा :

आंचलिक भाषा से किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में प्रचलित भाषिक रूप का प्रतीत होता है। इसमें स्थानीय शब्दावली, उच्चारण, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, संबोधन तथा उस क्षेत्र से जुड़े सांस्कृतिक विरासतों का स्वाभाविक मिश्रण देखने को पाया जाता है। वहीं ग्रामीण भाषा का संबंध गांव समाज और उसके दैनिक जीवन-परिवेश से होता है। इसमें खेती-किसानी, पशुपालन, हस्तशिल्प, घरेलू जीवन, श्रम, पारिवारिक संबंधों और लोकविश्वासों से जुड़े अनेक शब्द विशेष रूप से दिखाई देते हैं। साहित्य में आंचलिक भाषा का प्रयोग केवल किसी क्षेत्र के बाहरी जीवन को प्रस्तुत करने के लिए नहीं किया जाता, इसके माध्यम से उस समाज की **सामूहिक स्मृति, संस्कृति और पहचान** को भी अभिव्यक्ति मिलती है। स्थानीय शब्दों, मुहावरों और बोलचाल के प्रयोग से साहित्य में जीवन की वास्तविकता, सहजता और आत्मीयता बढ़ती है। इससे पढ़ने वाले को किसी विशेष क्षेत्र के जीवन और संस्कृति को निकट से समझने का अवसर मिलता है। केदारनाथ सिंह के यहाँ आंचलिकता किसी क्षेत्रीयता का रूप नहीं लेती। वे स्थानीय जीवन और भाषिक अनुभवों को व्यापक मानवीय संदर्भों से जोड़ते हैं। उनकी कविता में ग्रामीण परिवेश, लोक-संस्कृति और स्थानीय शब्दावली के माध्यम से श्रम, स्मृति, प्रकृति, संघर्ष और मानवीय संबंधों जैसे व्यापक विषयों को अभिव्यक्त किया गया है। इसीलिए उनकी कविता में आंचलिक भाषा एक ओर अपनी **मिट्टी, लोक-संस्कृति और सांस्कृतिक जड़ों** से जुड़ी रहती है, तो दूसरी ओर आधुनिक जीवन और सार्वभौमिक मानवीय संवेदनाओं को भी प्रभावी ढंग से व्यक्त करती है। इस प्रकार केदारनाथ सिंह की आंचलिक भाषा स्थानीय अनुभव को व्यापक जीवनानुभव में बदलने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाती है।

केदारनाथ सिंह की भाषा में लोकधर्मिता :

केदारनाथ सिंह की भाषा की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी **सहजता, आत्मीयता और लोकजीवन से निकटता** है। उनकी कविता में कठिन शब्दाडंबर और अनावश्यक भाषिक जटिलता के स्थान पर सामान्य जीवन से ग्रहण की गई

भाषा दिखाई देती है। वे रोजमर्रा के जीवन में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को काव्यात्मक संदर्भ देकर उनमें नए और गहरे अर्थ उत्पन्न करते हैं। इस कारण उनकी कविता पाठक को सहज रूप से अपने अनुभवों से जुड़ी हुई प्रतीत होती है। उनकी कविताओं में **रोटी, पानी, पेड़, घास, धूल, सड़क, खेत, घर, मिट्टी** जैसे सामान्य शब्द बार-बार आते हैं। ये शब्द केवल वस्तुओं के नाम बनकर नहीं रहते, बल्कि इनके माध्यम से श्रम, भूख, स्मृति, परिश्रम, प्रकृति, परिवार और सामाजिक जीवन जैसे व्यापक विषय अभिव्यक्त होते हैं। उदाहरण के लिए, 'रोटी' जीवन की मूल आवश्यकताओं और श्रम का संकेत बन सकती है, जबकि 'घर' केवल रहने का स्थान न होकर सुरक्षा, अपनापन और स्मृति का प्रतीक बन जाता है। केदारनाथ सिंह की लोकधर्मिता इस बात में भी दिखाई देती है कि वे **ग्रामीण जीवन और सामान्य मनुष्य के अनुभवों को कविता के केंद्र में** रखते हैं। उनकी भाषा में लोक-संस्कृति, ग्रामीण परिवेश और मानवीय संबंधों की सहज उपस्थिति कविता को अधिक जीवंत बनाती है। वे लोकभाषा और सामान्य शब्दावली के माध्यम से मनुष्य के मूल अस्तित्व, उसकी सामाजिक पहचान और अपनी जड़ों से जुड़े रहने की इच्छा को अभिव्यक्त करते हैं। इस प्रकार उनकी लोकधर्मी भाषा केवल ग्रामीण जीवन का चित्रण नहीं करती, बल्कि सामान्य जीवन के भीतर छिपे व्यापक मानवीय सत्य को सामने लाती है।

उनकी भाषा में लोकधर्मिता निम्न रूपों में दिखाई देती है—

- देशज शब्दों का प्रयोग।
- ग्रामीण जीवन से संबंधित शब्दावली।
- बोलचाल की सहज अभिव्यक्ति।
- संवादात्मक शैली।
- लोकजीवन से जुड़े बिंब और प्रतीक।
- पारिवारिक एवं सामुदायिक संबोधनों का प्रयोग।
- सरल वाक्य संरचना।

भोजपुरी एवं पूर्वांचली भाषिक संस्कार :

केदारनाथ सिंह की कविता में **भोजपुरी अंचल की सांस्कृतिक चेतना, लोक-स्मृति, जीवन की परंपराओं और सामाजिक अनुभवों** का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है । उनकी काव्य-भाषा पर पूर्वांचल के ग्रामीण चालचलन और लोकजीवन की गहरी छाप दिखाई देती है। भोजपुरी और पूर्वांचली भाषिक संस्कार उनकी कविता में केवल किसी क्षेत्र विशेष की पहचान को दर्शाने के लिए नहीं आते, बल्कि वे कवि के जीवनानुभव, स्मृतियों और संवेदनात्मक संसार का स्वाभाविक हिस्सा बनकर उपस्थित होते हैं। उनकी भाषा में सहजता, आत्मीयता और मिट्टी से गहरा जुड़ाव का महसूस होता है, जो उनकी कविता को विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। केदारनाथ सिंह की भाषिक चेतना को समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि **लोकभाषा उनके लिए केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि अनुभव को अभिव्यक्त करने की एक विशिष्ट शक्ति** है। भोजपुरी संस्कारों से मिले हुए शब्दों, मुहावरों, कथन-शैली और जीवन के माध्यम से वे उन भावों को स्पष्ट करते हैं जिन्हें केवल मानक या औपचारिक हिंदी में व्यक्त करना संभवतः उतनी सहजता से संभव नहीं होता। लोकजीवन से जुड़े शब्द, ग्रामीण परिवेश, पारिवारिक संबंध, खेत-खलिहान, प्रकृति और दैनिक जीवन के अनुभव उनकी काव्य-भाषा को अधिक जीवंत, स्वाभाविक और आत्मीय बनाते हैं।

भोजपुरी और पूर्वांचली भाषिक संस्कारों के कारण उनकी कविता में **लोकजीवन की मौखिक परंपरा और बातचीत की सहजता** भी देखने को मिलता है। गांव समाज में बोलचाल, संबोधन, लोककथाएँ, मुहावरे और दैनिक आचार-व्यवहार भाषा को एक विशिष्ट सुर प्रदान करते हैं। केदारनाथ सिंह इसी भाषिक सुर को अपनी कविता में रचनात्मक रूप से ग्रहण करते हैं। उनकी भाषा में बोलचाल की स्वाभाविकता और कथन की सहजता कविता को पाठक के निकट ले आती है। इससे उनकी कविता में औपचारिकता की जगह आत्मीयता और जीवन की प्रत्यक्ष अनुभूति अधिक दिखाई देती है। भोजपुरी भाषिक संस्कार उनकी कविता को **लोक-स्मृति और सांस्कृतिक पहचान** से जोड़ने का कार्य भी करते हैं। कवि के लिए भाषा केवल वर्तमान में बोले जाने वाले शब्दों का समूह नहीं है, बल्कि उसमें अतीत की स्मृतियाँ और जीवन के अनुभव भी सुरक्षित रहते हैं। बचपन, गाँव, परिवार, परिवेश और लोकजीवन से जुड़े अनुभव भाषा के माध्यम से कविता में पुनः जीवित होते हैं। इस दृष्टि से उनकी भाषा में

भोजपुरी का प्रभाव एक प्रकार की सांस्कृतिक स्मृति के रूप में भी देखा जा सकता है। यह स्मृति उनकी कविता को जड़ों से जोड़ती है और उसे एक विशिष्ट भावात्मक गहराई प्रदान करती है।

अतः कहा जा सकता है कि **भोजपुरी एवं पूर्वांचली भाषिक संस्कार केदारनाथ सिंह की काव्य-भाषा की महत्वपूर्ण पहचान हैं।** इन संस्कारों ने उनकी भाषा को लोकजीवन की सहजता, मिट्टी की गंध, सांस्कृतिक स्मृति और मानवीय आत्मीयता प्रदान की है। उन्होंने लोकभाषा के शब्दों और अनुभवों को आधुनिक हिंदी कविता के संदर्भ में रचनात्मक रूप से प्रयोग करते हुए यह सिद्ध किया कि क्षेत्रीय भाषिक संस्कार साहित्य की सीमाएँ निर्धारित नहीं करते, बल्कि उसके अनुभव-संसार को और अधिक समृद्ध बना सकते हैं। उनकी कविता में भोजपुरी और पूर्वांचल की स्थानीयता व्यापक मानवीय संवेदना से जुड़कर **लोक और आधुनिकता, स्थानीय और सार्वभौमिक तथा परंपरा और समकालीनता के बीच एक सार्थक सेतु** का निर्माण करती है। यही कारण है कि उनकी भाषिक चेतना आधुनिक हिंदी कविता की विविधता और समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

भोजपुरी भाषिक संस्कार उनकी कविता में मुख्यतः तीन स्तरों पर उपस्थित हैं—

(क) शब्दावली का स्तर

ग्रामीण क्षेत्रों के जीवन से संबंधित वस्तुओं और संबंधों के लिए प्रयुक्त शब्द कविता को स्थानीय धरातल एवं सरलता प्रदान करते हैं। मिट्टी, खेत, फसल, पेड़-पौधे, घरेलू वस्तुएं और ग्रामीण श्रम से जुड़े शब्द उनकी कविता की भाषिक संरचना का महत्वपूर्ण भाग हैं।

(ख) संवेदना का स्तर

लोकभाषा का वास्तविक प्रभाव केवल शब्दों में नहीं, बल्कि हमारे सोचने और अनुभव करने की पद्धति में दिखाई देता है। केदारनाथ सिंह की कविता में प्रकृति और मनुष्य के बीच निकट संबंध दिखाई देता है। यह संबंध लोकसंस्कृति की दृष्टि से निर्मित है।

(ग) वाक्य-विन्यास का स्तर

उनकी कविता में कई स्थानों पर बोले जाने वाली भाषा की सहजता दिखाई देती है। कथन सीधे पाठक से संवाद करता और प्रतीत होता है। यह शैली कविता को लोकजीवन के निकट ले जाती है।

ग्रामीण जीवन और शब्द-संसार :

केदारनाथ सिंह की कविता में ग्रामीण जीवन से संबंधित शब्दों का संसार अत्यंत व्यापक, समृद्ध और जीवंत है। खेत, मेड़, फसल, पानी, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नदी, मिट्टी, अनाज, रोटी, चूल्हा, धूप, हवा और गाँव की गलियाँ जैसे अनेक शब्द उनकी कविताओं में बार-बार उपस्थित होते हैं। ये शब्द केवल ग्रामीण परिवेश का बाहरी चित्र प्रस्तुत करने वाले तत्व नहीं हैं, बल्कि इनके माध्यम से कवि गाँव के सामाजिक जीवन, श्रम-संस्कृति, आर्थिक संघर्ष, पारिवारिक संबंधों, लोक-स्मृतियों और मानवीय संवेदनाओं को गहराई से व्यक्त करते हैं। उनकी कविता में गाँव किसी स्थिर पृष्ठभूमि या दृश्य मात्र के रूप में उपस्थित नहीं होता, बल्कि वह एक **अनुभव-संसार** के रूप में सामने झलकता है, जिसमें मानव और परिवेश का गहरा संबंध दिखाई देता है। केदारनाथ सिंह के यहाँ ग्रामीण शब्दावली का विशेष महत्त्व इसलिए भी है कि वह साधारण जीवन की छोटी-छोटी वस्तुओं में असाधारण अर्थ खोजते हैं। खेत और फसल केवल कृषि-जीवन के संकेत नहीं हैं, बल्कि वे किसान के श्रम, आशा और जीवन-संघर्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी प्रकार मिट्टी केवल धरती का वस्तु नहीं रह जाती, बल्कि वह मनुष्य की जड़ों, स्मृतियों और अपनेपन से जुड़ जाती है। **'रोटी'** जैसी सामान्य वस्तु जीवन की मूलभूत आवश्यकता, श्रम और भूख के व्यापक सामाजिक संदर्भों को सामने लाती है, जबकि **'टमाटर'** जैसी साधारण वस्तु भी कवि की दृष्टि में बाजार, किसान और रोजमर्रा के जीवन से जुड़े अनेक अर्थों को ग्रहण कर लेती है। उनकी चर्चित कविताओं **'बनारस', 'अकाल में सारस' और 'बाघ'** में भी प्रकृति, मनुष्य और समाज के बीच संबंधों को अलग-अलग स्तरों पर देखा जा सकता है। विशेष रूप से **'अकाल में सारस'** में प्रकृति और मानवीय संवेदना का संबंध अत्यंत मार्मिक रूप में उभरता है। वहीं **'बाघ'** में एक साधारण प्राणी अपनी मौजूदगी से भय, स्मृति, परिवेश और मानव के बदलते

संबंधों जैसे व्यापक प्रश्नों की ओर गहरे संकेत करता है। इस प्रकार उनके यहाँ पशु-पक्षी और प्राकृतिक वस्तुएँ केवल सजावटी बिंब नहीं हैं, बल्कि वे कविता के अर्थ-विस्तार में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

केदारनाथ सिंह की ग्रामीण शब्दावली की एक प्रमुख विशेषता उसकी **लोकधर्मिता** है। उनकी भाषा में ऐसे शब्द और बिंब मिलते हैं जो भारतीय गाँवों के सामान्य जीवन से सहज रूप से जुड़े हुए हैं। इन शब्दों के माध्यम से वे ग्रामीण समाज की वास्तविकता को बिना किसी कृत्रिमता के प्रस्तुत करते हैं। उनके यहाँ लोकजीवन का चित्रण न तो केवल रोमानी है और न ही केवल यथार्थवादी; उसमें स्मृति, संवेदना, संघर्ष और परिवर्तन सभी एक साथ दिखाई देते हैं। गाँव की वस्तुएँ और परिस्थितियाँ आधुनिक जीवन के प्रश्नों से भी जुड़ती हैं और इस तरह ग्रामीण अनुभव व्यापक सामाजिक अनुभव में बदल जाता है। इस दृष्टि से केदारनाथ सिंह का शब्द-संसार भारतीय ग्रामीण संस्कृति की **स्मृति और संवेदना का दस्तावेज** भी कहा जा सकता है। उनकी कविताओं में प्रयोग होने वाले सामान्य शब्द पाठक को अपने आसपास के जीवन से जोड़ते हैं और यह अनुभव कराते हैं कि साधारण वस्तुओं के अंदर भी गहरे मानवीय अर्थ छिपे होते हैं। खेत, मिट्टी, रोटी, पानी, फसल और पशु-पक्षी जैसे शब्द उनके काव्य में जीवन के विविध पक्षों—श्रम, भूख, प्रकृति, प्रेम, स्मृति, विस्थापन और सामाजिक परिवर्तन—को अभिव्यक्त करने लगते हैं। इस प्रकार उनकी कविता का ग्रामीण शब्द-संसार केवल गाँव का वर्णन नहीं करता, बल्कि **गाँव के माध्यम से मनुष्य और उसके समूचे जीवन-संघर्ष को समझने की दृष्टि प्रदान करता है।**

संवादात्मकता और बोलचाल की भाषा :

केदारनाथ सिंह की कविताओं में **संवादात्मक शैली** का विशेष महत्व दिखाई देता है। उनकी कविताएँ पाठक से सीधे बातचीत करती हुई प्रतीत होती हैं, जिसके कारण उनमें आत्मीयता, सहजता और निकटता का भाव उत्पन्न होता है। कवि अपनी बात को किसी जटिल या अत्यधिक औपचारिक भाषा में प्रस्तुत करने के बजाय सामान्य जीवन में प्रयुक्त होने वाली बोलचाल की भाषा के माध्यम से व्यक्त करते हैं। यही कारण है कि उनकी कविता पाठक के लिए सहज रूप से ग्रहणीय बन जाती है। उनकी भाषा में दैनिक जीवन के परिचित शब्द, सामान्य कथन, प्रश्न, संबोधन, छोटे-छोटे वाक्य, सहज प्रतिक्रियाएँ और बातचीत की स्वाभाविक लय दिखाई देती है। इससे कविता में कृत्रिमता का अभाव रहता है और वह जीवन के बहुत निकट अनुभव होती है। केदारनाथ सिंह की संवादात्मकता केवल कवि और पाठक के बीच होने वाले संवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि यह **कवि, वस्तु, प्रकृति, मनुष्य और उसके आसपास के संसार के बीच स्थापित होने वाले संवाद** के रूप में भी दिखाई देती है। उनकी कविता में कवि किसी वस्तु को केवल बाहर से देखकर उसका वर्णन नहीं करता, बल्कि उसके साथ एक आत्मीय संबंध स्थापित करता है। किसी पेड़, पक्षी, नदी, मिट्टी, खेत या सामान्य घरेलू वस्तु को देखकर कवि उसके अस्तित्व और उसके भीतर निहित अर्थों से संवाद करता हुआ दिखाई देता है। इस प्रक्रिया में साधारण वस्तुएँ भी कविता में जीवंत चरित्र का रूप ग्रहण कर लेती हैं।

उनकी कविताओं में **बोलचाल की भाषा** का प्रयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह भाषा किसी कृत्रिम साहित्यिक संस्कार से बँधी हुई नहीं है, बल्कि सामान्य मनुष्य के जीवन और उसके अनुभवों से निकलती है। बाजार, गाँव, घर, खेत, सड़क और दैनिक जीवन से जुड़े शब्द उनकी कविता में सहज रूप से प्रवेश करते हैं। इस कारण उनकी भाषा में लोकजीवन की गंध और सामाजिक यथार्थ की गर्माहट महसूस होती है। बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए भी वे कविता की कलात्मकता को कम नहीं होने देते, बल्कि साधारण शब्दों के माध्यम से गहरे और बहुस्तरीय अर्थों को व्यक्त करते हैं। उनकी यही विशेषता उन्हें आधुनिक हिंदी कविता के महत्वपूर्ण कवियों में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। संवादात्मक शैली उनकी कविता में **नाटकीयता और गतिशीलता** भी उत्पन्न करती है। प्रश्न और उत्तर, संबोधन और प्रतिक्रिया, कथन और प्रतिकथन जैसी संरचनाएँ कविता को केवल एकतरफा वक्तव्य बनने से रोकती हैं। पाठक कविता को पढ़ते हुए स्वयं उस संवाद का हिस्सा बन जाता है। कई बार ऐसा अनुभव होता है कि कवि किसी परिचित व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति के सामने खड़ा होकर उससे बातचीत कर रहा है और पाठक उस बातचीत को निकट से सुन रहा है। इस प्रकार कविता और पाठक के बीच की दूरी कम होती जाती है तथा कविता का अनुभव अधिक प्रत्यक्ष और जीवंत बन जाता है।

केदारनाथ सिंह की संवादात्मकता में **लोकधर्मी चेतना** भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। लोकजीवन में संवाद केवल विचारों का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि संबंधों और संवेदनाओं को व्यक्त करने का माध्यम भी है। कवि इसी लोक-संवाद की सहजता को अपनी कविता में स्थान देते हैं। वे जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं, वस्तुओं और अनुभवों के माध्यम से बड़े सामाजिक और मानवीय प्रश्नों को उठाते हैं। उनकी भाषा में बातचीत की सहजता होने के बावजूद उसमें गहरी वैचारिकता और संवेदनात्मक अर्थवत्ता बनी रहती है। इस प्रकार केदारनाथ सिंह की संवादात्मक शैली और बोलचाल की भाषा उनकी काव्य-भाषा की महत्वपूर्ण विशेषता है। यह शैली उनकी कविता को **सहज, आत्मीय, जीवंत, लोकधर्मी और प्रभावशाली** बनाती है। सामान्य शब्दों और बातचीत के ढंग से वे जटिल जीवन-सत्यों को अभिव्यक्त करने में सफल होते हैं। उनकी कविता में कवि और पाठक, मनुष्य और प्रकृति तथा वस्तु और संवेदना के बीच निर्मित यह संवाद उनकी कविता को व्यापक जीवनानुभव से जोड़ता है। यही कारण है कि उनकी कविताएँ पढ़ते समय पाठक केवल कविता को पढ़ता नहीं, बल्कि उसमें उपस्थित संसार से स्वयं संवाद करता हुआ अनुभव करता है।

देशज बिंबों के माध्यम से ग्रामीण भाषा का विस्तार :

केदारनाथ सिंह के काव्य में **भाषा और बिंब एक-दूसरे से गहरे रूप में जुड़े हुए हैं।** उनकी काव्य-भाषा की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसमें ग्रामीण और देशज जीवन से प्राप्त बिंबों का व्यापक और प्रभावशाली प्रयोग मिलता है। गाँव, खेत, मिट्टी, पेड़, पौधे, पक्षी, नदी, बीज, फसल, अनाज, रोटी, चूल्हा और पानी जैसे सामान्य जीवन से जुड़े तत्व उनकी कविता में बार-बार उपस्थित होते हैं। इन बिंबों के माध्यम से उनकी भाषा केवल ग्रामीण परिवेश का चित्र प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि उसमें निहित सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय अनुभवों को भी अभिव्यक्त करती है। इस प्रकार देशज बिंब उनकी भाषा को आंचलिकता, सहजता और जीवन की वास्तविकता से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

केदारनाथ सिंह के यहाँ ग्रामीण जीवन से जुड़े शब्द केवल वस्तुओं के नाम नहीं हैं। उनके साथ **लोक-स्मृति, सामाजिक अनुभव, श्रम-संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना** भी जुड़ी रहती है। यही कारण है कि उनकी कविता में सामान्य और परिचित शब्द भी विशेष अर्थवत्ता प्राप्त कर लेते हैं। वे अपने आसपास की साधारण वस्तुओं को बहुत गहरी संवेदना के साथ देखते हैं और उनके माध्यम से जीवन के व्यापक प्रश्नों को व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, **'पेड़'** उनके काव्य में केवल प्रकृति का एक सामान्य हिस्सा नहीं रह जाता, बल्कि वह स्मृति, समय, जड़ों, जीवन और मनुष्य के साथ प्रकृति के बदलते संबंधों का प्रतीक बन सकता है। पेड़ के माध्यम से कवि एक ओर प्राकृतिक संसार से जुड़ता है, तो दूसरी ओर मनुष्य के अतीत और वर्तमान के बीच संबंध को भी अनुभव करता है।

इसी प्रकार **'रोटी'** जैसा सामान्य शब्द भी उनके काव्य में व्यापक सामाजिक और मानवीय अर्थ ग्रहण कर लेता है। रोटी केवल भोजन या भूख की पूर्ति का साधन नहीं है, बल्कि वह श्रम, किसान, परिवार, आर्थिक संघर्ष और जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से जुड़ी हुई है। रोटी के माध्यम से ग्रामीण और सामान्य जनजीवन की वास्तविकताओं को समझा जा सकता है। इसी तरह **'मिट्टी'** उनके यहाँ केवल धरती का पदार्थ नहीं, बल्कि मनुष्य की जड़ों, पहचान, स्मृति और अपनेपन का बिंब बन जाती है। मिट्टी के साथ जुड़ा हुआ अनुभव व्यक्ति को उसके गाँव, जन्मभूमि और सांस्कृतिक परिवेश की ओर वापस ले जाता है। **'बीज' और 'फसल'** जैसे देशज बिंब भी केदारनाथ सिंह की कविता में विशेष अर्थ रखते हैं। बीज अपने भीतर भविष्य की संभावना और जीवन की निरंतरता को समेटे रहता है। वह छोटे से आकार में बड़े जीवन की संभावना का संकेत देता है। इसी प्रकार फसल किसान के श्रम, प्रतीक्षा, आशा और प्रकृति पर उसकी निर्भरता को व्यक्त करती है। इन बिंबों के माध्यम से कवि ग्रामीण जीवन के श्रम और संघर्ष को केवल बाहरी दृश्य के रूप में प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उसके भीतर मौजूद आशा, धैर्य और जीवन-विश्वास को भी सामने लाता है।

केदारनाथ सिंह की देशज बिंब-योजना में **प्रकृति और मनुष्य के पारस्परिक संबंध** को भी विशेष महत्व प्राप्त है। पेड़, पक्षी, नदी, खेत और मिट्टी उनके काव्य में मनुष्य से अलग स्वतंत्र संसार नहीं बनाते, बल्कि उसके जीवन का अभिन्न हिस्सा दिखाई देते हैं। ग्रामीण जीवन में प्रकृति के साथ मनुष्य का संबंध जितना सहज और गहरा है, वही संबंध उनकी कविता की संवेदना में भी दिखाई देता है। पक्षियों की उपस्थिति, खेतों का दृश्य, मिट्टी की गंध अथवा

पेड़ों की स्मृति—ये सभी तत्व कवि के लिए जीवन को समझने और व्यक्त करने के माध्यम बन जाते हैं। देशज बिंबों के माध्यम से उनकी भाषा में **लोकधर्मिता और सांस्कृतिक स्मृति** का विस्तार भी होता है। वे ग्रामीण जीवन को किसी रोमानी कल्पना के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उसके वास्तविक अनुभवों—श्रम, अभाव, संघर्ष, स्मृति, परिवर्तन और आशा—के साथ प्रस्तुत करते हैं। इसीलिए उनकी ग्रामीण शब्दावली में एक ओर स्थानीयता की पहचान बनी रहती है, तो दूसरी ओर वह व्यापक मानवीय संवेदना से जुड़ जाती है। स्थानीय शब्द और बिंब अपनी सीमित भौगोलिक सीमा से बाहर निकलकर सार्वभौमिक जीवनानुभव का रूप ग्रहण करने लगते हैं।

"अकाल में सारस" में ग्रामीण भाषिक संवेदना :

केदारनाथ सिंह की प्रसिद्ध काव्य-कृति **'अकाल में सारस'** में ग्रामीण जीवन, प्रकृति और मानवीय संवेदना का संबंध अत्यंत मार्मिक और प्रभावशाली रूप में व्यक्त हुआ है। अकाल केवल प्राकृतिक संकट नहीं होता, बल्कि उसका सीधा प्रभाव मनुष्य के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर पड़ता है। खेतों में सूखापन, पानी का अभाव, फसल का नष्ट होना, पशु-पक्षियों की कठिनाइयाँ और ग्रामीण जीवन की असुरक्षा—ये सभी स्थितियाँ अकाल को एक व्यापक मानवीय संकट में बदल देती हैं। केदारनाथ सिंह इस संकट को किसी दूरस्थ या अमूर्त घटना के रूप में नहीं देखते, बल्कि ग्रामीण जीवन के निकट अनुभवों और परिचित शब्दों के माध्यम से उसे अभिव्यक्त करते हैं। इस कारण उनकी कविता में अकाल की अनुभूति केवल दृश्य के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के गहरे संकट के रूप में सामने आती है।

इस कृति की भाषा में **सरलता, सहजता और गहन संवेदनशीलता** का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है। कवि कठिन और जटिल शब्दावली का सहारा लेने के बजाय गांव इलाकों के जीवन से जुड़े सामान्य शब्दों और परिचित बिंबों का प्रयोग करता है। जैसे खेत, पानी, मिट्टी, आकाश, पक्षी, फसल और मनुष्य जैसे शब्द कविता के अनुभव-संसार को वास्तविक और विश्वसनीय बना देते हैं। इन शब्दों के द्वारा से पाठक अकाल की भयावहता को केवल समझता ही नहीं, अपितु उसे महसूस भी करता है। ग्रामीण शब्दावली कविता को स्थानीय परिवेश से जोड़ते हुए उसके भीतर मौजूद मानवीय पीड़ा को अधिक प्रभावशाली बना देती है।

'सारस' इस कृति का अत्यंत महत्वपूर्ण छवि है। सारस सामान्यतः जल, खेत, हरियाली और म गांव के प्राकृतिक परिवेश से जुड़ा पक्षी है। अकाल परिस्थिति में उसका उपस्थित होना प्रकृति के सामान्य जीवन-क्रम में आए व्यवधान की ओर संकेत करता है। सारस के माध्यम से कवि मनुष्य और प्रकृति के बीच के गहरे संबंध को रेखांकित करता है। यहाँ पक्षी केवल प्रकृति का एक जीव नहीं रह जाता, बल्कि वह उस संकट का संवेदनशील प्रतीक बन जाता है, जिसका प्रभाव पूरे जीवन-जगत पर पड़ता है। सारस की उपस्थिति कविता में, आशा, करुणा और जीवन की निरंतरता के विभिन्न अर्थों को जन्म देती है। कवि की ग्रामीण भाषिक संवेदना का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वह **प्रकृति को मनुष्य से अलग करके नहीं देखता।** खेत सूखते हैं तो केवल फसल प्रभावित नहीं होती, बल्कि किसान का जीवन और उसका भविष्य भी संकट में पड़ जाता है। पानी का अभाव केवल प्राकृतिक समस्या नहीं, बल्कि जीवन के अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न बन जाता है।

पशु-पक्षियों की स्थिति भी ग्रामीण जीवन की समग्र पीड़ा को व्यक्त करती है। इस प्रकार प्रकृति और मनुष्य के बीच एक ऐसी संवेदनात्मक एकता दिखाई देती है, जिसमें एक का संकट दूसरे के संकट से जुड़ा हुआ है। 'अकाल में सारस' में आंचलिकता केवल कुछ स्थानीय शब्दों या ग्रामीण दृश्यों की उपस्थिति तक सीमित नहीं है। यहाँ **आंचलिकता एक व्यापक जीवन-दृष्टि** का रूप ग्रहण कर लेती है। ग्रामीण परिवेश के माध्यम से कवि जीवन की मूलभूत समस्याओं—भूख, अभाव, असुरक्षा, संघर्ष और अस्तित्व—को सामने लाता है। स्थानीय अनुभव धीरे-धीरे सार्वभौमिक मानवीय अनुभव में बदल जाता है। यही कारण है कि कविता का ग्रामीण संसार केवल किसी एक गाँव या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह व्यापक भारतीय जीवन और मानवीय संवेदना का प्रतिनिधित्व करने लगता है। इस कृति की भाषिक विशेषता यह भी है कि **साधारण शब्दों के भीतर असाधारण अर्थ** छिपे हुए हैं। कवि ग्रामीण जीवन की सामान्य वस्तुओं और प्राकृतिक तत्वों के माध्यम से ऐसी संवेदना निर्मित करता है, जो पाठक के मन में लंबे समय तक बनी रहती है। भाषा की सहजता कविता को जनसामान्य के निकट लाती है, जबकि उसके

बिंब और प्रतीक उसे गहरी अर्थवत्ता प्रदान करते हैं। इस प्रकार लोकजीवन से प्राप्त शब्दावली कविता में सामाजिक यथार्थ, प्रकृति-बोध और मानवीय करुणा को एक साथ व्यक्त करने का माध्यम बनती है।

अतः **'अकाल में सारस'** में ग्रामीण भाषिक संवेदना केवल ग्रामीण जीवन के चित्रण का साधन नहीं है, बल्कि वह कवि की व्यापक मानवीय दृष्टि का महत्वपूर्ण आधार है। अकाल, खेत, पानी, पक्षी और मनुष्य के माध्यम से कवि प्रकृति और जीवन के संकट को एक-दूसरे से जोड़ता है। सारस का बिंब इस संकट के बीच जीवन की संवेदनशील उपस्थिति और जिजीविषा का संकेत देता है। इस प्रकार स्थानीय प्रकृति और ग्रामीण भाषा के माध्यम से केदारनाथ सिंह समूचे मानवीय अस्तित्व के संकट, करुणा, संघर्ष और **जीवन की अदम्य जिजीविषा** को अत्यंत सहज और प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करते हैं।

'बनारस' कविता और स्थानीय जीवन की भाषा :

केदारनाथ सिंह की कविता **'बनारस'** में एक विशिष्ट नगर की सांस्कृतिक चेतना, स्थानीय जीवन और उसकी विशिष्ट जीवन-लय का अत्यंत प्रभावशाली चित्र मिलता है। बनारस केवल एक भौगोलिक नगर नहीं है, बल्कि वह अपनी परंपराओं, लोकविश्वासों, धार्मिक-सांस्कृतिक गतिविधियों, गलियों, घाटों और जनजीवन के कारण एक विशिष्ट सांस्कृतिक संसार का निर्माण करता है। केदारनाथ सिंह इस सांस्कृतिक संसार को केवल बाहरी दृश्यों के माध्यम से प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि भाषा और बिंबों के माध्यम से उसके जीवंत अनुभव को अभिव्यक्त करते हैं। कविता में शहर की गति, उसकी गलियाँ, घाट, सामान्य जनजीवन और सांस्कृतिक वातावरण मिलकर एक ऐसी भाषिक संरचना का निर्माण करते हैं, जिसमें बनारस की विशिष्ट पहचान स्पष्ट रूप से उभरती है। वैसे तो **बनारस एक नगर है**, फिर भी उसकी सांस्कृतिक चेतना गहरे रूप में लोकजीवन और पूर्वांचली संवेदना से जुड़ी हुई है। यहाँ की बोली, व्यवहार, लोकपरंपराएँ और जीवन जीने का सहज ढंग नगर की पहचान को विशिष्ट बनाते हैं। केदारनाथ सिंह इसी स्थानीय जीवन-लय को अपनी कविता में पकड़ते हैं। उनकी भाषा में बनारस केवल एक स्थान का नाम नहीं रह जाता, बल्कि वह एक ऐसे जीवंत सांस्कृतिक अनुभव का रूप ले लेता है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता, स्थिरता और परिवर्तन तथा सामान्य जीवन और गहरी सांस्कृतिक स्मृति एक साथ उपस्थित दिखाई देते हैं।

'बनारस' में स्थानीयता का प्रयोग केवल **भौगोलिक विवरण** के रूप में नहीं हुआ है। कवि नगर की गलियों, वातावरण और जीवन-व्यवहार को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठक उस स्थान की विशिष्टता को महसूस कर सके। भाषा और दृश्य एक-दूसरे के साथ मिलकर बनारस की अपनी लय और वातावरण का निर्माण करता हैं। साधारण जीवन से जुड़े शब्द और दृश्य कविता को स्थानीय अनुभव से जोड़ते हैं, उनके अंदर छिपे सांस्कृतिक संकेत कविता को व्यापक अर्थ प्रदान करते हैं। इस प्रकार बनारस के स्थानीय जीवनशैली कविता में एक सांस्कृतिक अनुभव के रूप में सामने ले आता है। इस कविता के माध्यम से यह भी स्पष्ट होता है कि केदारनाथ सिंह के यहाँ **आंचलिकता केवल गाँव या ग्रामीण जीवन तक सीमित नहीं है।** उनके लिए किसी भी अंचल की अपनी भाषा, स्मृति, संस्कृति और जीवन-लय होती है, जो उसे विशिष्ट पहचान देती है। बनारस की स्थानीयता इसी व्यापक अर्थ में आंचलिकता का जीवंत उदाहरण बनती है। कवि स्थान विशेष के अनुभवों को उसकी भाषा और सांस्कृतिक परिवेश के द्वारा व्यक्त करते हुए उन्हें मानवीय अनुभव से जोड़ देता है। यही विशेषता उनकी काव्य-दृष्टि को व्यापक और समावेशी बना देती है।

अतः **'बनारस' कविता** में स्थानीय जीवन की भाषा सिर्फ किसी शहर का वर्णन करने का जरिया नहीं है, अपितु यह उसकी सांस्कृतिक पहचान और जीवन-चेतना को प्रस्तुत करने का प्रभावशाली माध्यम बनता है। भाषा, दृश्य, लोक-संवेदना और सांस्कृतिक स्मृति के समन्वय से कवि बनारस शहर को एक जीवंत अनुभव-संसार में परिवर्तन लाने का काम करता है। कवि कि आंचलिकता स्थान की भौगोलिक क्षेत्र से आगे बढ़कर उसकी **भाषिक, सांस्कृतिक और मानवीय पहचान** का व्याख्यान करती है।

'रोटी' और सामान्य जन की भाषा :

केदारनाथ सिंह की कविता में **'रोटी'** एक अत्यंत महत्वपूर्ण, सामान्य और अर्थपूर्ण बिंब के रूप में सामने आती है। रोटी केवल भोजन की एक वस्तु नहीं है, बल्कि यह भारतीय ग्रामीण जीवन, श्रम, भूख, संघर्ष, आर्थिक अभाव और जीवन-निर्वाह से जुड़ी व्यापक संवेदनाओं का प्रतीक बन जाती है। भारतीय समाज में रोटी का संबंध मनुष्य की सबसे मूलभूत आवश्यकता से है। विशेष रूप से किसान, मजदूर और श्रमिक वर्ग के जीवन में रोटी उनके दैनिक परिश्रम और जीवन-संघर्ष से सीधे जुड़ी हुई है। इसलिए 'रोटी' जैसे अत्यंत सामान्य शब्द के माध्यम से कवि समाज के उन वर्गों के जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं, जिनका अस्तित्व निरंतर श्रम और सीमित संसाधनों पर टिका हुआ है। केदारनाथ सिंह की काव्य-दृष्टि की विशेषता यह है कि वे **रोजमर्रा के जीवन की सामान्य वस्तुओं को कविता का विषय** बनाकर उनके भीतर छिपे व्यापक सामाजिक और मानवीय अर्थों को सामने लाते हैं। रोटी इसी दृष्टि का महत्वपूर्ण उदाहरण है। सामान्य जीवन में रोटी जितनी सहज और परिचित वस्तु है, कविता में उसका अर्थ उतना ही व्यापक हो जाता है। वह भूख और भोजन के साथ-साथ परिवार, श्रम, किसान, खेत, बाजार और जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से जुड़ जाती है।

रोटी के माध्यम से कवि यह संकेत करते हैं कि मनुष्य के बड़े से बड़े सामाजिक और सांस्कृतिक प्रश्नों की जड़ में उसकी मूलभूत जीवन-आवश्यकताएँ भी उपस्थित रहती हैं। 'रोटी' का शब्द-संसार **परिवार और घरेलू जीवन** से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। रोटी बनाने और प्राप्त करने की प्रक्रिया में घर, श्रम, संबंध और जीवन की दिनचर्या एक-दूसरे से जुड़ते हैं। ग्रामीण समाज में खेत से लेकर घर और घर से लेकर भोजन की थाली तक श्रम की एक पूरी श्रृंखला दिखाई देती है। किसान खेत में मेहनत करता है, फसल तैयार होती है, अनाज घर तक पहुँचता है और अंततः वही अनाज रोटी का रूप ग्रहण करता है। इस प्रकार रोटी अपने भीतर पूरे श्रम-संसार की स्मृति को समेटे रहती है। कवि इस साधारण वस्तु के माध्यम से जीवन की उस वास्तविकता को सामने लाते हैं, जिसे अक्सर साहित्य और समाज के अभिजात विमर्श में अनदेखा कर दिया जाता है। केदारनाथ सिंह की भाषा की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि वह **सामान्य लोगों की भाषा और अनुभवों के बहुत निकट** दिखाई देती है। वे कठिन, कृत्रिम और अत्यधिक अलंकारिक शब्दावली के स्थान पर ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो सामान्य मनुष्य के दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। 'रोटी' जैसे शब्द उनकी कविता को लोकजीवन से जोड़ देते हैं और पाठक को अपने परिचित संसार की अनुभूति कराते हैं। उनकी भाषा में सामान्य शब्दों की उपस्थिति कविता को सरल तो बनाती ही है, साथ ही उनमें निहित अर्थों के कारण कविता में गहरी संवेदनशील और सामाजिक शक्ति भी उत्पन्न होती है।

'रोटी' के माध्यम से कवि **भूख और सामाजिक असमानता** जैसे प्रश्नों की ओर भी इशारा करते हैं। जिन वस्तुओं की आवश्यकता हर मानव को समान रूप से होती है, उसकी उपलब्धता सभी के लिए समान नहीं होती। इस स्तर पर रोटी केवल व्यक्तिगत भूख का प्रतीक न रहकर सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक विषमता से जुड़ा सवाल उत्पन्न करते है। किसान और श्रमिक के लिए रोटी का इंतजाम करने का अर्थ उसके पीछे किए गए कठोर मेहनत और परिश्रम से जुड़ा है। इसीलिए रोटी का बिंब परिश्रम की गरिमा और श्रमिक जीवन की कठिनाइयों की गाथा का व्याख्यान करता है। केदारनाथ सिंह सामान्य वस्तुओं को उनकी सरलता के कारण कविता से बाहर नहीं रखते, बल्कि उनकी **सरलता में ही असाधारण अर्थ की संभावना** खोजते हैं। 'रोटी' इसका सशक्त उदाहरण है। बिना किसी अनावश्यक अलंकरण के जब यह शब्द कविता में आता है, तो उसके साथ भूख, श्रम, परिवार, किसान, खेत, अभाव और जीवन की अनेक स्मृतियाँ जुड़ जाती हैं। यही प्रक्रिया उनकी कविता को जीवन के वास्तविक अनुभवों से जोड़ती है। उनके यहाँ कविता किसी दूरस्थ या कृत्रिम साहित्यिक संसार की वस्तु नहीं, बल्कि मनुष्य के दैनिक जीवन का हिस्सा बन जाती है। इस प्रकार **'रोटी' और सामान्य जन की भाषा** के माध्यम से केदारनाथ सिंह की काव्य-भाषा की लोकधर्मी और जीवनपरक प्रकृति स्पष्ट होती है। रोटी जैसे साधारण शब्द को वे व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय संदर्भ प्रदान करते हैं। उनकी भाषा अभिजात या कृत्रिम साहित्यिक संसार तक सीमित न रहकर सीधे जनसाधारण के अनुभवों और संवेदनाओं से संवाद करती है। सामान्य शब्दों के भीतर गहरे अर्थ और अनेक स्तरों की संवेदना उत्पन्न करना ही उनकी काव्य-भाषा की प्रमुख शक्ति है। इसी कारण उनकी कविता में **लोकजीवन, श्रम-संस्कृति, मानवीय संघर्ष और सामान्य जन की आकांक्षाएँ** सहज रूप से अभिव्यक्त होती हैं और उनकी भाषा आधुनिक हिंदी कविता को एक विशिष्ट जनपक्षधर एवं जीवन-सापेक्ष स्वर प्रदान करती है।

आंचलिकता और आधुनिकता का संबंध :

केदारनाथ सिंह को केवल ग्रामीण या आंचलिक कवि मानना उनके काव्य-संसार को सीमित करना होगा। उनकी कविताओं में गाँव, लोकजीवन और प्रकृति के साथ-साथ शहर, विस्थापन, बदलते सामाजिक संबंध, राजनीतिक परिस्थितियाँ और आधुनिक मानव की परेशानियों में भी प्रमुखता देखने को मिलता हैं। उनकी आधुनिक दृष्टि अपनी सांस्कृतिक जड़ों और लोक-स्मृतियों से जुड़ी हुई है। वे आधुनिक जीवन को स्वीकार करते हुए भी परंपरा और लोकजीवन से अपना संबंध बनाए रखते हैं। केदारनाथ सिंह की कविता में **गाँव और शहर, लोक और आधुनिकता तथा परंपरा और परिवर्तन के बीच निरंतर संवाद** दिखाई देता है। गाँव उनके लिए केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि स्मृति, संस्कृति और मानवीय आत्मीयता का प्रतीक है। दूसरी ओर, शहर आधुनिक जीवन की गति, अकेलेपन, संघर्ष और परिवर्तन को सामने लाता है। इन दोनों के बीच का संबंध उनकी कविता को व्यापक सामाजिक संदर्भ प्रदान करता है। उनकी आंचलिकता आधुनिकता के विरोध में नहीं, बल्कि उसे मानवीय आधार देने का कार्य करती है। लोकभाषा, ग्रामीण प्रतीकों और सामान्य जीवन के अनुभवों के माध्यम से वे आधुनिक मनुष्य की चिंताओं और संवेदनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। इस कारण उनकी कविता में स्थानीय अनुभव व्यापक मानवीय अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। उनकी रचनाओं में विस्थापन और बदलते परिवेश की पीड़ा के साथ अपनी जड़ों और पहचान को सुरक्षित रखने की इच्छा भी प्रतीत होती है। इस प्रकार केदारनाथ सिंह की आंचलिकता किसी संकीर्ण क्षेत्रीयता तक सीमित नहीं है। वह आधुनिक जीवन की जटिलताओं को समझने का एक प्रभावी माध्यम बनती है। उन्होंने सिद्ध किया कि आधुनिक हिंदी कविता लोकजीवन और लोकभाषा से जुड़कर भी आधुनिक, विचारशील और व्यापक बन सकती है। यही आंचलिकता और आधुनिकता का संतुलन केदारनाथ सिंह की काव्य-भाषा और संवेदना को विशिष्ट साहित्यिक पहचान प्रदान करता है।

आंचलिक एवं ग्रामीण भाषा की प्रमुख विशेषताएं :

केदारनाथ सिंह की रचनाओं में आंचलिक एवं ग्रामीण भाषा की निम्न प्रमुख विशेषताएं दिखाई देती हैं—

- **सहजता -** उनकी भाषा कृत्रिमता और भारीपन से मुक्त है। सामान्य शब्दों के माध्यम से वे जटिल अनुभवों को व्यक्त करते हैं।
- **लोक-संपृक्ति -** उनकी कविता का संबंध किसान, मजदूर, सामान्य मनुष्य और ग्रामीण समाज से बना रहता है।
- **देशज शब्दों का प्रभाव -** स्थानीय जीवन और संस्कृति से संबंध रखने वाले शब्द उनकी भाषा को विशिष्ट बनाते हैं।
- **दृश्यात्मकता -** उनकी भाषा चित्रात्मक है। पाठक के सामने खेत, पेड़, नदी, पक्षी और गांव के दृश्य जीवंत हो उठते हैं।
- **संवादधर्मिता -** उनकी कविताएं पाठक और वस्तु-जगत से संवाद स्थापित करती दिखती हैं।
- **प्रतीकात्मक विस्तार -** ग्रामीण शब्द और वस्तुएं व्यापक मानवीय तथा सामाजिक अर्थ ग्रहण करती हैं।

केदारनाथ सिंह की भाषा का साहित्यिक महत्व :

केदारनाथ सिंह आधुनिक हिंदी कविता के उन महत्वपूर्ण कवियों में से आते हैं, जिन्होंने कविता की भाषा को जीवन के अत्यंत निकट लाने का सार्थक प्रयत्न किया है। उनकी काव्य-भाषा में न तो कृत्रिम अलंकरण का अनावश्यक आग्रह दिखाई देता है और न ही ऐसी कठिनता, जो कविता को सामान्य पाठक से दूर कर दे। उन्होंने अपने काव्य में रोजमर्रा के जीवन, ग्रामीण परिवेश, लोक-संस्कृति, सामाजिक संबंधों और मानवीय संवेदनाओं से जुड़े शब्दों तथा बिंबों को विशेष महत्व दिया। इस दृष्टि से उनकी भाषा आधुनिक हिंदी कविता में एक ऐसी भाषिक संवेदना का निर्माण करती है, जिसमें सहजता, संप्रेषणीयता, लोकानुभव और बौद्धिकता का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। केदारनाथ सिंह की भाषा का सबसे प्रमुख गुण उसकी **सहजता और स्वाभाविकता** है। वे सामान्य जीवन में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को इस प्रकार काव्यात्मक संदर्भ प्रदान करते हैं कि साधारण शब्द भी विशेष अर्थ और भाव ग्रहण कर लेते हैं। उनके लिए कविता का विषय केवल असाधारण घटनाएँ या महान ऐतिहासिक प्रसंग नहीं हैं, बल्कि मनुष्य के आसपास घटित होने वाली छोटी-छोटी घटनाएँ, वस्तुएँ और अनुभव भी कविता के महत्वपूर्ण विषय हो सकते हैं। इसी कारण उनकी भाषा में घर, खेत, गाँव, सड़क, बाजार, पेड़, पानी, चिड़िया, मिट्टी और मनुष्य जैसे परिचित शब्द बार-बार दिखाई देते हैं। इन शब्दों के माध्यम से वे जीवन की व्यापक अनुभूतियों को

अभिव्यक्ति देते हैं। उनकी काव्य-भाषा में **लोकभाषा और आंचलिकता** का विशेष महत्व है। केदारनाथ सिंह का रचनात्मक संसार ग्रामीण जीवन और लोक-संस्कृति से गहराई से जुड़ा हुआ है। इसलिए उनकी भाषा में लोकजीवन की ध्वनियाँ, मुहावरे, शब्द और सांस्कृतिक संकेत सहज रूप से उपस्थित होते हैं। यह आंचलिकता उनकी कविता को सीमित नहीं करती, बल्कि उसे अधिक व्यापक और जीवंत बनाती है। स्थानीय शब्दों के माध्यम से वे किसी विशेष भूगोल, संस्कृति या समुदाय की संवेदना को सामने लाते हैं और फिर उसी अनुभव को सार्वभौमिक मानवीय अर्थ प्रदान करते हैं। इस प्रकार उनकी कविता में स्थानीयता और वैश्विक मानवीयता एक-दूसरे से जुड़ जाती हैं। केदारनाथ सिंह की भाषा का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष **बातचित करने और साहित्यिक भाषा का संतुलन** है। उन्होंने यह स्थापित किया कि कविता के लिए अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ अथवा कठिन शब्दावली आवश्यक नहीं है। सामान्य बातचीत में प्रयुक्त भाषा भी गंभीर विचारों और गहन संवेदनाओं को व्यक्त करने में सक्षम हो सकती है। वे बोलचाल के शब्दों को केवल ज्यों-का-त्यों कविता में नहीं रखते, बल्कि उन्हें नए संदर्भ, नए अर्थ और नए बिंबों के साथ प्रस्तुत करते हैं। परिणामस्वरूप उनकी भाषा एक साथ परिचित भी लगती है और अर्थ की नई संभावनाएँ भी खोलती है। उनकी भाषा में **आधुनिक बौद्धिक चेतना** भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी कविता केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समकालीन समाज, मनुष्य की बदलती चिंताधारा, आधुनिक जीवन की विसंगतियों और सामाजिक संबंधों पर विचार भी करती है। विशेष बात यह है कि वे गंभीर विचारों को दुरूह दार्शनिक शब्दावली के माध्यम से प्रस्तुत करने के बजाय सामान्य जीवन के प्रतीकों और अनुभवों से जोड़कर व्यक्त करते हैं। यही कारण है कि उनकी कविता में विचार और संवेदना एक-दूसरे के विरोधी न होकर परस्पर पूरक दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष :

केदारनाथ सिंह की रचनाओं में **आंचलिक एवं ग्रामीण भाषा का प्रयोग** उनकी काव्यात्मक पहचान का एक महत्वपूर्ण आधार है, जो उन्हें आधुनिक हिंदी कविता में विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है। उनकी भाषा में पूर्वांचल और ग्रामीण जीवन की मिट्टी, लोक-संस्कृति, सामाजिक संबंधों, पारिवारिक आत्मीयता तथा सामान्य जनजीवन की सहजता गहराई से उपस्थित है। भोजपुरी और अन्य लोकभाषिक संस्कारों से प्रभावित उनकी अभिव्यक्ति हिंदी कविता के शब्द-संसार को व्यापक बनाती है और उसे जीवन के वास्तविक अनुभवों के अधिक निकट ले आती है। उनके यहाँ आंचलिक भाषा केवल किसी क्षेत्र विशेष की बोली का प्रतिनिधित्व नहीं करती, बल्कि वह उस क्षेत्र की सामाजिक स्मृति, सांस्कृतिक चेतना और जीवन-दृष्टि को भी अपने भीतर समेटे रहती है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में **स्थानीय शब्द, ग्रामीण बिंब, सामान्य वस्तुएँ, प्रकृति के तत्व और बोलचाल की भाषा** केवल यथार्थ चित्रण के साधन नहीं रह जाते, बल्कि वे अपने भीतर मानवीय संबंधों, स्मृति, श्रम, प्रकृति, संघर्ष, अभाव, प्रेम और सामाजिक जीवन के गहरे अर्थों को समेट लेते हैं। खेत, मिट्टी, बीज, पेड़, पक्षी, पानी और रोटी जैसे सामान्य शब्द उनके काव्य में व्यापक प्रतीकात्मक और सांस्कृतिक अर्थ ग्रहण करते हैं। इस प्रकार वे साधारण जीवन की वस्तुओं को काव्यात्मक गरिमा प्रदान करते हुए यह सिद्ध करते हैं कि कविता के लिए विषय और भाषा की संभावनाएँ केवल अभिजात या शास्त्रीय संसार तक सीमित नहीं हैं।

केदारनाथ सिंह की विशेषता यह है कि वे **सामान्य शब्दों और सामान्य जीवन-स्थितियों में भी व्यापक मानवीय अनुभवों** को पहचानने की क्षमता रखते हैं। उनकी कविता में ग्रामीण जीवन केवल अतीत की स्मृति या रोमानी कल्पना के रूप में उपस्थित नहीं है, बल्कि वह बदलते सामाजिक और आधुनिक जीवन के साथ निरंतर संवाद करता है। उनके यहाँ गाँव और शहर, परंपरा और आधुनिकता, प्रकृति और मानव तथा लोक और समकालीन जीवन के बीच निरंतर संबंध और संवाद दिखाई देता है। वे लोकभाषा और ग्रामीण शब्दावली का प्रयोग केवल सजावटी या भाषिक विशिष्टता परिलक्षित करने के लिए नहीं करते, बल्कि उनके माध्यम से जीवन के वास्तविक अनुभवों को अधिक प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करते हैं। उनकी भाषा में बोलचाल की सहजता होने के बावजूद उसमें गहरी वैचारिकता और अर्थवत्ता बनी रहती है। यही संतुलन उनकी कविता को एक ओर सामान्य पाठक के निकट लाता है ।

'अकाल में सारस', 'बनारस', 'रोटी', 'टमाटर' और 'बाघ' जैसी रचनाओं के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि केदारनाथ सिंह साधारण ग्रामीण एवं स्थानीय जीवन के तत्वों को व्यापक सामाजिक और मानवीय संदर्भ प्रदान करते हैं। 'अकाल' में प्रकृति और मनुष्य के संकट का संबंध दिखाई देता है, 'सारस' प्रकृति और जीवन की संवेदना को सामने लाता है, 'बनारस' में स्थान विशेष की सांस्कृतिक चेतना अभिव्यक्त होती है और 'रोटी' जैसे सामान्य शब्द के माध्यम से श्रम, भूख और जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का संसार निर्मित होता है। इस प्रकार उनकी रचनाओं में स्थानीय अनुभव धीरे-धीरे व्यापक जीवनानुभव में परिवर्तित हो जाता है। केदारनाथ सिंह की आंचलिकता का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उसमें **संकीर्ण क्षेत्रीयता का अभाव** है। वे किसी क्षेत्र विशेष को उसकी सीमाओं में बाँधकर प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि स्थानीय जीवन के माध्यम से सार्वभौमिक मानवीय संवेदनाओं तक पहुँचते हैं। उनकी कविता में गाँव का अनुभव केवल गाँव का अनुभव नहीं रह जाता; वह मनुष्य के विस्थापन, स्मृति, पहचान, श्रम, प्रकृति और अस्तित्व से जुड़े व्यापक प्रश्नों को सामने लाने लगता है। इस दृष्टि से उनकी आंचलिकता स्थानीय से वैश्विक और व्यक्तिगत से सार्वभौमिक की ओर जाने वाली एक रचनात्मक प्रक्रिया बन जाती है। उनकी काव्य-भाषा का एक और महत्वपूर्ण पक्ष **लोक और आधुनिकता का रचनात्मक समन्वय** है। उन्होंने लोकभाषिक संस्कारों को आधुनिक हिंदी कविता की संवेदना और शिल्प के साथ इस प्रकार जोड़ा कि दोनों के बीच किसी प्रकार का विरोध दिखाई नहीं देता है। ग्रामीण शब्दावली और लोकबिंब उनकी कविता को जड़ों से जोड़ते हैं, जबकि आधुनिक जीवन के प्रश्न और बदलते सामाजिक संदर्भ उसे समकालीन बनाते हैं। इस प्रकार उनकी भाषा परंपरा से ऊर्जा ग्रहण करते हुए आधुनिकता के प्रश्नों का सामना करती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि **केदारनाथ सिंह की आंचलिक एवं ग्रामीण भाषा उनकी कविता का केवल भाषिक पक्ष नहीं, बल्कि उनकी संपूर्ण काव्य-दृष्टि का महत्वपूर्ण आधार है।** उन्होंने हिंदी कविता के शब्द-संसार को जनजीवन के अनुभवों, लोक-स्मृतियों, ग्रामीण संस्कृति और सामान्य मनुष्य की संवेदनाओं से समृद्ध किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सामान्य बातचीत के शब्द, देशज बिंब और ग्रामीण जीवन से जुड़े अनुभव भी गंभीर साहित्यिक अभिव्यक्ति के अत्यंत प्रभावशाली माध्यम बन सकते हैं। उनकी कविता में स्थानीयता व्यापक मानवीयता का रूप ग्रहण करती है और लोकभाषा आधुनिक संवेदना से जुड़कर नई अर्थवत्ता प्राप्त करती है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. सिंह, केदारनाथ, ज़मीन पक रही है, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृ. 24-25.
2. सिंह, केदारनाथ, ज़मीन पक रही है, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृ. 47.
3. सिंह, केदारनाथ, ज़मीन पक रही है, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृ. 94-95.
4. सिंह, केदारनाथ, यहाँ से देखो, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 37.
5. सिंह, केदारनाथ, यहाँ से देखो, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 76.
6. सिंह, केदारनाथ, अकाल में सारस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 12.
7. सिंह, केदारनाथ, अकाल में सारस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 17.
8. सिंह, केदारनाथ, अकाल में सारस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 20-21.
9. सिंह, केदारनाथ, अकाल में सारस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 23.
10. सिंह, केदारनाथ, अकाल में सारस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 77.
11. सिंह, केदारनाथ, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 20.
12. सिंह, केदारनाथ, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 59.
13. सिंह, केदारनाथ, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 98.
14. सिंह, केदारनाथ, बाघ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम वाणी संस्करण, 2009, पृ. 26.
15. त्रिपाठी, अनिल (सम्पा.), मिट्टी की रोशनी, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 70.
16. त्रिपाठी, अनिल (सम्पा.), मिट्टी की रोशनी, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 117.
17. सहाय, निरंजन, केदारनाथ सिंह और उनका समय, शिल्पायन पब्लिशर्स, दिल्ली, पृ. 230.
18. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद, कवि केदारनाथ सिंह, पृ. 100.